शक्तियों को झिंझोड़ कर रख देती है। यह वही समय था जब क्रान्ति वीर नाना कानपुर में क्रान्ति की तैयारी कर रहा था। दयाराम (ऋषि दयानन्द) भी उन दिनों वहीं थे क्योंकि मंगल पाण्डेय नामक सैन्य ने उनसे आर्शीवाद मांगा था।

(राज. का इतिहास)

ऋषि के सपनों का भारत एक ऐसा भारत था जो पूर्ण वैदिकता से युक्त हो। परन्तु शोक ! महाशोक ! कि अपने ही लोग उन्हें सहन नहीं कर सके—पं. चमूपति के शब्दों में—जहर भी पिलाई अपनों ने, खन्जर भी चलाए अपनो ने, अपनों के ये एहसां क्या कम हैं, गैरों से शिकायत क्या होगी।

अब समय आ गया है कि मेरे देश के नवयुवक भी ऋषि के कार्य को आगे बढ़ाएं। नवयुमकों से मिलकर प्रसन्नता का आभास अवश्य होता है, क्योंकि सच्चरित्र और लगनशील युवक वैदिक मर्यादाओं को अक्षुण्ण रखने में समर्थ हो सकते हैं। मैं तो आर्योपदेशक ओम् प्रकाश के शब्दों में कहना चाहता हूं—

"भारत सन्तान जाग ! देश की युवा शक्ति अपने को पहचान ! देश में फैलती जा रही विघटन की विषैली-दुर्भावना, उभर रही साम्प्रदायिकता और साम्प्रदायिकता और दलगत दुर्दमनीय भेदक भावना तुम्हें चैलेंज दे रही। अपने रहते हुए क्या इन्हें इसी प्रकार उभरने और देश का नाश करने दोगे ?"

जिस प्रकार ऋषि दयानन्द दीवाली के दिन अपने हृदय पर भारत के असह्य दु:ख-पीड़ा को लेकर चले गये। उसी प्रकार हमें भी उनकी प्रेरणा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही है। मार्ग में कठिनाइयां अवश्य आएंगी। पर उनको झेलते हुए हम बुझे हुए घरों में दीपों की अवली जलाकर ऋषि का कार्य एवं अपना कर्त्तव्य पूरा कर सकेंगे तो मैं यह दीवाली (ऋषि निर्वाण दिवस) मनाना सफल समझूंगा।